Vol 6 Issue 5 June 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 5 | June - 2016

Indian Streams Research Journal

रामविलास शर्मा का काव्य–चिंतन

देवेन्द्र स्वामी

प्रस्तावना :–

रामविलास शर्मा की काव्य-दृष्टि बहुआयामी है जिसे हम उनकी स्वयं की कविताओं में और उनके द्वारा की गई काव्यालोचनाओं में सहज की देख सकते हैं। उन्होंने कविताएँ कम लिखी हैं, इसका कारण वे यह बताते हैं कि "कविता लिखने की ओर मेरी रूचि बराबर रही है लेकिन लिखा है मैंने कम। जिसे साहित्य-क्षेत्र में उतरना कहते हैं, वह मैंने कभी नही किया; साहित्य से एक पाठक का सम्पर्क रहने से कभी-कभी गद्य में लिखा करता था। ज्यों-ज्यों वह सम्पर्क बढ़ता गया, त्यों-त्यों गद्य लिखना बढ़ता गया। पद्य लिखना कम भी होता गया । जो व्यक्ति एक विकासोन्मुख साहित्य की आवश्यकताओं को पहचान कर उनके अनुरूप गद्य लिखे, वह कवि हो भी कैसे सकता है ? मेरे बहुत से लेख साहित्य के अशाश्वत सत्य, वाद-विवादों से पूर्ण हैं, कविता में शाश्वत सत्यों की मैंने खोज की हो, यह भी दिल पर हाथ रखकर नहीं कह सकता।, रामविलास शर्मा के उपरोक्त कथन से हमें उनकी व्यक्तिगत संवेदना के विषय में पता चलता है कि कविता से उनका व्यक्तिगत संवेदना के विषय में पता चलता है कि कविता से उनका हमेशा गहरा सरोकार रहा है; संभवतः यही कारण है कि वे कवि भी बन सके और काव्य के समालोचक भी। जैसाकि उन्होंने कहा है कि 'विकासोन्मुख साहित्य की आवश्यकताओं को पहचान कर उसके अनुरूप ही गद्य लिखा' यह आवश्यकताओं को पहचानना और उसके अनुरूप गद्य लिखना ही उनकी गहरी काव्य-दृष्टि का द्योतक है। हालाँकि उन्होंने स्वयं को इस कर्म में कोई शाश्वत खोजकर्त्ता नहीं पाया है, किन्तु साहित्य विषयक दूरगामी सत्य की गहन पड़ताल करने में अभूतपूर्व योगदान अवश्य दिया है।

रामविलास शर्मा की काव्य-दृष्टि का महत्त्वपूर्ण पहलु ग्रामीण जनोन्मुखता है। उनकी कविता का आलोचना में गाँव की सुगंध को सहज ही अनुभव किया जा सकता है, जिसे वे 'तारसप्तक' के वक्तव्य में पूरे गद्-गद् भाव से कहते हैं, "कुछ कविताओं में गाँव के दृश्यों का वर्णन है। बचपन गाँव के खेतों में बीता है और वह सम्पर्क कभी नहीं छूटा । इस समय भी खिड़की के बाहर खेत दिखाई दे रहा है जिसमें कटी हुई ज्वार के ठूँठ ही रह गये हैं, सुनहली धूप में कबूतर दाने चुग रहे है और थोड़ी दूर पर नहर का पुल पार करके किसान सिर पर बाजार के सामान का गट्ठर रखे घर लौट रहे हैं। मैं साधारणतः छह घण्टे काम करूँ तो खेतों के बीच में रहकर दस घण्टे कर सकता हूँ। इन खेतों को प्यार करना किसी ने नहीं सिखाया । ये मेरे गाँव के खेत भी नहीं हैं; गाँव यहाँ से सैकड़ों मील दूर है। फिर भी, हिन्दुतान के जिस गाँव पर भी साँझ की सुनहली धूप पड़ती है, वह अपने गाँव-जैसा ही लगता है। उन्नीसवीं सदी के रोमाण्टिक कवियों में मुझे फ्रांस के कवि इसीलिए ज्यादा पसन्द हैं कि उन्होंने इन खेतों को किसानों की तरह प्यार किया है। हिन्दी के नये कवियों में मुझे केदारनाथ अग्रवाल भी इसीलिए ज्यादा पसन्द हैं कि उनकी रचनाओं में 'भदेसपन' काफी है।"[२] उनके उपरोक्त कथन से यह प्रतीत होता है कि उनके अपने गाँव के माध्यम से सम्पूर्ण भारत का गाँव उनके लिए प्रिय हो गया है। प्रकृति के प्रति अतिशय रूझान और ग्राम्य किसानी जीवन के प्रति अथाह आकर्षण उनकी काव्य चिंतन में लोकपक्ष निरंतर केन्द्र में बना रहा। अतः आचार्य रामचंद्र शुक्ल के संदर्भ में उन्होंने लिखा हैं। यही कारण है कि उनके काव्य चिंतन में लोकपक्ष निरंतर केन्द्र में बना रहा। अतः 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल के संदर्भ में उन्होंने लिखा है– "शुक्ल जी ने अलंकारों को प्रधानता देने वाले

शास्त्र पर और चमत्कारों और उक्ति-सौंदर्य के काव्य पर जो प्रहार किए हैं, वह नये भारत के सांस्कृतिक आंदोलन का महत्वपूर्ण अंग हैं सदियों से सामंत वर्ग ने साहित्य को अपने मनोरंजन का साधन बना रखा था, साहित्यकारों को अपना क्रीतदास कर रखा था । मध्यकाल के संत कवियों ने इस सामन्ती चाकरी के विरोध में लोक-साहित्य की नींव डाली थी। शुक्ल जी ने नये भारत की संस्कृति के उत्थान के लिए संत कवियों के जनवादी तत्त्व लिए, उनसे पहले के संस्कृत कवियों से करूणा और सक्रिय प्रतिरोध के भाव लिए। उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी तीनों ही में चमत्कारवाद, शुद्ध कलावाद का विरोध करके और साहित्य की लौकिकता का प्रतिपादन करके उन्होंने भारतीय संस्कृति के जनवादी रूप को प्रतिष्ठित करने में योग दिया"[३] साहित्य में तटस्थता, जनता के प्रति उदासीनता, शुद्ध, कला और शुद्ध कल्पना के समर्थकों को शुक्ल जी का यह रूप यद्यपि पसंद नहीं था, लेकिन रामविलास शर्मा ने साहित्यिक विकास के लिए आचार्य रामचंद्र शुक्ल की इन धाराणाओं को महत्वपूर्ण माना है यही कारण है कि उन्हें रीतिकालीन कवियों के विषय में शुक्ल जी के समर्थन में कहना पड़ा कि 'रीतिकालीन कवियों ने हिन्दी का काव्य-क्षेत्र संकुचित किया, जीवन की अनेकरूपता का उसमें अभाव है।'

रामविलास शर्मा दृष्टि सम्पन्न आलोचक थे, समग्र मध्यकालीन कविता के संदर्भ में अनेक प्रगतिवादी आलोचकों के द्वारा कई तरह की भ्रान्तियाँ फैलाई गई थी; लेकिन रामविलास शर्मा ने उन तमाम गलतफहमियों को दूर कर भक्तिकालीन काव्य के लोकधर्मी और जीवंत पक्षों को उद्घाटित किया। उन्होंने अपने पर विचार को दृढ़तापूर्वक अन्यत्र लिखा भी हैं, "मध्यकालीन हिन्दी कविता एक विशाल सागर है जिसकी सबसे बड़ी तरंगे संत कवियों की बानी है। इस सागर की सीमाएँ हैं, लहरों में परस्पर विरोध भी है, फिर भी हिन्दी के उस स्वर्ण-युग में इन कवियों ने प्रेम और सहानुभूति की स्थापना करके सामाजिक बंधनों से मनुष्य को मुक्ति दी। यही उनकी गेयता का सबसे बड़ा आधार है जो आज भी उनकी रचनाओं को लोकप्रिय बनाए हुए है।"[४] यद्यपि रीतिकालीन कविता को रामविलास शर्मा प्रतिगामी कविता मानते हैं लेकिन किसी भी कवि को वे थोड़ा-बहुत सामान्य जनता की ओर उन्मुख देखते हैं तो वे अपनी दृष्टि स्पष्ट करना नहीं भूलते। 'रीतिकालीन परम्परा' निबंध में उन्होंने लिखा है- "प्रकृति संबधी इन कवियों की अनेक रचनाएँ जीवन का उल्लास प्रकट करती हैं, त्यौहारों और उत्सवों के वर्णन में ग्राम-जीवन की झलक भी है, जैसे पद्माकर के होली संबंधी छंदों में"[५]"

रामविलास शर्मा की काव्य-दृष्टि मार्क्सवादी होते हुए भी उनका चिंतन सदैव भारत की धरती, उसकी संस्कृति और परिवेश से जुड़ा रहा है। उनकी दृष्टि किसी नैतिक आग्रह से न बंधकर यथार्थ की समर्थक है। यह समर्थन कल्पना को नकारती नहीं अपितु वह जीवन की परिस्थतियों के, यथार्थ संबंधों के मध्य की कल्पना व आदर्शों को महत्त्व प्रदान करती है। रामविलास शर्मा के अनुसार कल्पना कवि या साहित्यकार की शक्ति तभी बन सकती है, जब उसकी जड़ें यथार्थ की भाव-भूमि में आरोपित होगी । उनकी काव्य-दृष्टि सोद्देश्य है। वह उद्देश्य सामाजिक वस्तु है, न कि कल्पना की चेरी या चमत्कार-प्रदर्शन ।

रामविलास शर्मा की काव्य-दृष्टि में जीवंतता और लोकधर्मिता भी है। वे तुलसी-साहित्य की विशेषतः सराहना करते हैं। इन्होंने तुलसी-साहित्य को जनवादी तत्त्वों से अनुप्राणित मानते हुए यह स्थापित किया कि जनसाधारण के कवि की मिसाल हमारी भाषा में ही नहीं, अन्यत्र भी मिलना दुर्लभ है, क्योंकि लोकमंगल के तत्वों से अनुस्यूत तुलसी-साहित्य ने समाज से पीड़ित एवं सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि से हाशिए पर पड़े वर्गों की चेतना को जाग्रत किया। भक्तिकाल के प्रमुख कवियों पर लिखते हुए इन्होंने जायसी की जन-संस्कृति का कवि कहा है। सूर और बिहारी के काव्य में श्रृंगार-वर्णन का अन्तर स्पष्ट करते हुए रामविलास शर्मा यह प्रतिपादित करते हैं कि दोनों कवियों के श्रृंगार-वर्णन में रचनात्मक पृष्ठभूमि का अन्तर है। सूर का काव्य जन-संस्कृति पर अधिष्ठित है, तो बिहारी की रचनाओं का आधार सामन्ती पृष्ठभूमि है। रामविलास शर्मा सूर और तुलसी की सामाजिक जागरूकता की सराहना करते हुए साहित्य में उनकी प्रगतिशील चेतना का महत्त्व प्रतिपादित करते हैं।

रामविलास शर्मा की काव्य-दृष्टि का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष यथार्थ को सम्पूर्ण रूप से काव्य में देखना है। उन्होंने 'यथार्थ' शब्द को अर्थ-विस्तार किया है। साधारणतः जिन बातों को कुछ सर्जक यथार्थ-चित्रण के घेरे से बाहर समझते हैं उन्हें, उन्होंने यथार्थ के घेरे के अंदर समेटकर उसकी अर्थव्याप्ति बढ़ा दी है। उन्होंने बाह्य-जगत के इन्द्रियबोध एवं भावजगत को एक ही यथार्थ के दो पक्ष मानते हुए दोनों के ही चित्रण को काव्य के लिए समान रूप से उपयोगी माना है। उनकी दृष्टि में भी यथार्थ के दो पक्ष हैं- "बाह्य जगत् का इन्द्रियबोध और मनुष्य के मन का भावजगत्"[६] ये एक-दूसरे से पूर्णतः स्वतंत्र न होकर परस्पर संबद्ध हैं। " बाह्य-जगत के इन्द्रिबोध में 'मुनष्य का मन' और उसका अन्तर्जगत्।"[७]

चाहे बैसवाड़ा हो, डलमऊ में गंगा, केरल या निराला पर लिखी गई कविता हो, रामविलास शर्मा दारूण यथार्थ का चित्रण करते हुए प्रायः कविता का अंत आशा के संदेश में करते हैं। यह द्वन्द्वात्मकता का भी आग्रह है और कवि के विश्वास का भी । वे कविताओं की अंतर्वस्तु के केन्द्र में कोई-न-कोई द्वन्द्व या दो प्रमुख विरोधी पक्षों की स्थिति होती है। यह द्वन्द्व प्रधानतः इन रूपों में मिलता है :-

१. शोषक और शोषित के रूप में।
२. प्राचीनता और आधुनिकता के रूप में ।
३. जीवन की सुखद् और दुखद् स्थितियों के रूप में ।

रामविलास शर्मा प्रकृति के जो चित्र खींचते है उसकी शुरूआत प्रायः आकाश की किसी-न-किसी छवि से होती है। खाका कुछ इस प्रकार का होता है-ऊपर आकाश है, नीचे धरती (या सागर)। आकाश में केवल प्रकृति की लीला चलती है। धरती पर मनुष्य की चेष्टाएँ हैं, द्वन्दात्मक जीवन-जगत् है, नदी-नाले, पर्वत, खेत-खलिहान, गरीब-अमीर, शोषित-शोषक, नर-नारी हैं। उच्चवर्ग

पर भरपूर व्यंग्य रामविलास शर्मा की कविताओं में व्याप्त है, जो उन्होंने अगिया–बैताल और निरंजन के नाम से लिखी हैं। इन कविताओं में ब्रिटिश नौकरशाहों, उनके देशी दलालों, रजवाड़ों, नवाबों, पूंजीपतियों, बड़े जमींदारों, स्वातंत्रयोत्तर भारत में जनता के हितों की उपेक्षा करने वाले नेताओं, मंत्रियों आदि पर करारा व्यंग्य है।

तूफान के समय, अभिशाप आदि कविताएँ इसी कोटि में आती है। वस्तुतः नया गौरव, वर्तमान, अभिशाप, सार्थकता, चुनौती आदि कविताओं में विचार–तत्त्व की ही प्रधानता है। जहाँ या तो नए कवियों के प्रति उनके उत्तरदायित्व का उद्‌बोधन है या जीवन और जगत् में विरूद्ध स्थितियों के बीच अपनी शब्द परीक्षा की आकांक्षा।

रामविलास शर्मा की दृष्टि में नारी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वे नारी को वस्तु रूप में न देखकर समाज में बराबर की हिस्सेदार के रूप में देखते हैं। इसे हम 'कुंहरे में बादल' कविता में देख सकते हैं। वह खेतों में काम कर रही है। यहीं उसका सौंदर्य है। निश्चित ही वह सुन्दर है। उसमें कोई रीतिकालीन असाधारण सौंदर्य नहीं, बल्कि उसका सौंदर्य झुककर पानी लगाने का काम करते हुए कमर सीधी करके सहसा उठकर खड़े होने में है। श्रमयुक्त कर्मठता उसके सौंदर्य का अभिन्न घटक है –

बीच खेत में साहस उठकर
खड़ी हुई वह युवती सुंदर
लगा रही थी पानी झुककर
सीधी करे कमर वह पलभर
खड़ी हो गई सहसा उठकर

रामविलास शर्मा की काव्य–दृष्टि कुत्सित अवसरवाद से घृणा करती है और जो सच्चे अर्थों में राष्ट्रवादी, प्रगतिवादी हैं उनसे वे बेहद प्रभावित होते हैं, यह कारण है कि उन्होंने निराला पर जितना लिखा उतना किसी अन्य पर नहीं। निराला उनके लिए एक सच्चे साहित्य साधक थे, उनकी प्रगतिशील और क्रांतिकारी स्वर की निरंतरता ने ही निराला को निराला बनाया। "औसत प्रगतिवादियों को कोसने वाले कविगण भारत के स्वाधीन होने पर समाजवाद की बातें भूल गए । अनेक लेखकों ने समाजवाद को तानाशाही का पर्यायवाची मानकर तरह–तरह से पूंजीवाद का समर्थन किया।"[८] निराला की क्रान्ति संबंधी भावधारा उनकी कविताओं में देश की स्वाधीनता के पश्चात् भी प्रवाहित रहती है।

रामविलास शर्मा की काव्य–दृष्टि का एक महत्वपूर्ण पक्ष है व्यंग्य–अभिव्यक्ति। यह उनकी अपनी कविताओं में भी देखा जा सकता है और उनके प्रिय कवियों निराला, नागार्जुन में भी। रामविलास शर्मा उनकी इस विशेषता को जगह–जगह उद्‌धृत करते हैं। " निराला के व्यक्तित्व की एक विशेषता उनकी हास्य और व्यंग्य की प्रवृत्ति है। भावुक कवियों में यह प्रवृत्ति कम देखी जाती है। निराला के गद्य में, पद्य में भी, व्यंग्य की तीक्ष्णता, हास्य की उल्लास–व्यंजना अन्य छायावादियों से अधिक है।"[९]

रामविलास शर्मा की काव्य–दृष्टि संस्कृति के उन तत्त्वों को लेकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है जो प्रगतिशील जीवन–मूल्यों के अनुरूप हैं और जन–साधारण के जीवन–संघर्ष के लिए मूलभूत आधार का काम करती है। किंतु, उनकी दृष्टि में संस्कृति के दो रूप हैं–समाजवादी संस्कृति एवं पूँजीवादी संस्कृति। उनकी दृष्टि में समाजवादी संस्कृति ही काम्य एवं महत्वपूर्ण है न कि पूंजीवादी संस्कृति। वे समाज–सचेतन और वर्ग–पक्षधरता का समर्थन करते हैं। उनकी कविताएँ भी साधारण के प्रति पूरी सहानुभूति से भरी हुई हैं। वे शोषित जनों के दुःख से आहत होते हैं और अपनी कविताओं में उनके सुख–दुख को ही स्थान देते हैं। उनकी अधिकांश कविताओं का विषय शोषित जन है। युवकों की दशा से चिंतित होकर उन्होंने 'बेकार' एवं 'हड्डियों का ताप' जैसी कविताएँ लिखी हैं।

रामविलास शर्मा में सामाजिकता इतने व्यापक रूप में है कि यह उन्हे साहित्य के जिस भी कोने से मिल जाए, या कहीं पर भी दबी हो, वे उसे पहचान कर तुरंत अपने पाठकों के विस्मृत ज्ञान की स्मृति में लाकर सामाजिकता की भावना को जाग्रत कर व्यापक रूप देते हैं। वह चाहे साहित्य के इतिहास के विमर्श के संदर्भ में हो या वर्तमान साहित्य के चिंतन में । भवभूति, कालिदास, सूर, तुलसी, भारतेंदु, निराला, प्रसाद, पंत, महादेवी, नागार्जुन, केदारनाथ, मुक्तिबोध आदि कवियों–साहित्यकारों के संदर्भ में उनके विवेचन–विश्लेषण से यह बात स्पष्ट हो जाती है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जिस आलोचना दृष्टि को लेकर चले थे, उसे सही संदर्भों में व्याख्यायित और आगे बढ़ाने का काम रामविलास शर्मा ने किया। शुक्ल जी के प्रिय कवियों में तुलसी, जायसी, सूर आदि थे । रामविलास शर्मा ने न केवल जायसी, सूर, तुलसी पर उनकी आलोचना की विशेषताओं को परख कर हिंदी जनता के समक्ष प्रस्तुत किया बल्कि उनकी धारणाओं को आगे बढ़ाकर आधुनिक काल के कवियों की विभिन्न विशेषताओं को सही संदर्भों में मूल्यांकित भी किया। महाप्राण निराला के काव्य से अभिभूत होकर वे कविता की आलोचना की ओर अग्रसर हुए। जितना अधिक उन्होंने निराला पर लिखा है उससे स्पष्ट है कि निराला उनके आदर्श कवि हैं। निराला की काव्य क्षमताओं को उन्होंने हमारे सामने उजागर ही नहीं किया बल्कि निराला के व्यक्तित्व को भी बड़ी पैनी दृष्टि से परखा है। उनका व्यक्तित्व और काव्य दोनों ही उनकी काव्यगत कसौटी पर खरे उतरते है। अतः निराला से अप्रतिम रूप से प्रभावित होना स्वाभाविक है। हम यह कह सकते हैं कि निराला के संदर्भ में किया गया उनका व्यापक विवेचन–विश्लेषण उनकी प्रौढ़ काव्य–दृष्टि का सूचक है। वे निराला में मन, कर्म और वचन की एकता को देखकर अपनी व्यापक काव्य–चेतना का विकास करते हैं।

नयी कविता के संदर्भ में काव्य–कला की चर्चा करते हुए रामविलास शर्मा नागार्जुन के क्रान्तिकारी स्वरूप की प्रशंसा करते हुए नहीं अघाते। उन्होंने लिखा है– "नागार्जुन जितने क्रान्तिकारी, सचेत रूप से हैं, उतने अचेत रूप से। उनका क्रान्तिकारीत्व एक ओर साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और पूंजीवाद की प्रखर आलोचना में प्रकट होता है, दूसरी ओर विभिन्न जनपदों की श्रमिक जनता

को एकताबद्ध करने में भी प्रकट होता है।"[९०] उन्होंने पन्त के प्रगतिवाद को सामन्तवाद से प्रभावित तथा उनके दृष्टिकोण को पूंजीवादी दृष्टिकोण कहकर कटु आलोचना की है। वे पंत के सांस्कृतिक दृष्टिकोण से असहमत हैं और यह स्थापित करते हैं कि "उनकी संस्कृति को राजनीति से स्वतन्त्र रखने का दावा केवल एक भुलावा है।"[९१]

रामविलास शर्मा की काव्य–दृष्टि प्रगतिशील रही है। इनकी आलोचना–विमर्शों में नए, साहित्य के प्रगतिशील पक्ष के साथ–साथ पतनोन्मुख पक्ष भी केन्द्र में रहा है। उन्होंने प्रगतिशीलता की ठोस भूमि पर ही निराला साहित्य को परखा और साहित्य में समाज के हित को केन्द्र में रखते हुए यह सिद्ध किया कि निराला जैसे कवियों ने ही सामाजिक स्वाधीनता की मांग की है, जिसे रीतिकालीन विलास–प्रियता और चमत्कार–प्रियता निरन्तर रौंदते जा रहे थे।

कविता के संबध में रामविलास शर्मा की दृष्टि वस्तुवादी धरातल पर प्रतिष्ठित है। इसके प्रति इन्होंने जनवादी दृष्टि अपनाई है। उनके विचार से जनता के सम्पर्क में ही कविता की सफलता निहित है। कविता की भाषा को हृदय की भाषा मानते हुए इन्होंने काव्यानुकूल भाषा पर विचार प्रकट किया है। उनके अनुसार भावों व विचारों को सही स्वरूप देने के लिए उचित शब्द–चयन का ज्ञान आवश्यक है। रामविलास शर्मा ने काव्य में यथार्थवाद के विवेचन को महत्त्वपूर्ण माना है, किन्तु उसके साथ ही कल्पना की आवश्यकता पर भी बल दिया है। उन्होंने दोनों की अन्विति को स्वीकार करते हुए स्पष्ट किया कि काव्य में सामाजिक परिस्थतियों के चित्रण के साथ–साथ प्रकृति चित्रण भी संभव है तथा प्रेम का सहज–चित्रण भी। काव्य में प्रकृति व प्रेम का चित्रण इसलिए संभव है क्योंकि उपन्यास व कहानी की तरह गीतों व मुक्तकों में सामाजिक विषमताओं का हू–ब–हू चित्रण असंभव है, इसलिए कल्पना का सहारा लेना आवश्यक प्रतीत होता है। फिर भी, उनकी दृष्टि में काव्य में यथार्थवाद अधिक महत्वपूर्ण है। अतः स्पष्ट है कि रामविलास शर्मा काव्य में यथार्थवाद को सीमित अर्थ में न लेकर व्यापक अर्थ में परिभाषित करते हैं।

रामविलास शर्मा ने काव्य में मुक्त छंद के प्रति मोह को कम करने पर बल दिया है। निराला की मुक्त छंद की रचनाओं के भाव और रूप–सौंदर्य की यद्यपि वे मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हैं, लेकिन काव्य में मुक्त छंद के प्रयोग की सीमाओं के प्रति वे सावधान थे। चूंकि उनकी दृष्टि में काव्य लोकधर्मी, प्रगतिकामी, मानव संघर्षों को मुखर करने वाला होना चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक है कि काव्य में समाजोन्मुखता बनी रहे। इस दृष्टि से मुक्त छंद उन्हें कविता को जन–जन तक पहुँचाने में उपयुक्त नहीं लगता। उस संबध में उनके विचार हैं कि "मुक्त छन्द में रची कविता को कुछ व्यक्तियों का समूह मिलकर नहीं पढ़ सकता। अतः उसमें अकेलापन है, जबकि कविता सामाजिक क्रिया है।"[९२] रामविलास शर्मा ने हिन्दी–साहित्य में तुलसी व जायसी के चौपाई छंद की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। उनका मत है कि "इन्होंने स्वरों के उतार–चढ़ाव द्वारा काव्य में विविध सौन्दर्य उत्पन्न कर दिया।"१३ इस प्रकार छंद, मुक्त छंद और उससे जुड़ी हुई समाजोन्मुखता को उन्होंने भली–भांति पहचान कर काव्य में सौंदर्य के महत्त्व को स्थापित किया।

रामविलास शर्मा का काव्य संबंधी विवेचन इतना विस्तृत है कि उनके दृष्टिकोण को समझने के लिए गहन अध्ययन और अध्यवसाय की आवश्यकता है। उनकी काव्य–दृष्टि को समझने के लिए उनके समग्र आलोचना साहित्य का अवगाहन करना अपरिहार्य है। उनकी काव्य–दृष्टि को समझने के लिए उनके समग्र आलोचना साहित्य का अवगाहन करना अपरिहार्य है। उनकी काव्य–दृष्टि वैज्ञानिक इतिहास–दृष्टि और साहित्य की गहरी सूझ–बूझ से समन्वित है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जैसे समर्थ और समृद्ध आलोचक पर गहराई से विचार करना सूर, तुलसी, जायसी, भारतेंदु, महावीर प्रसाद द्विवेदी, निराला, नागार्जुन, केदारनाथ, अज्ञेय, मुक्तिबोध आदि बड़े कवियों के भाव–बोध तक पहुँचकर उनका विवेचन–विश्लेषण करना सामान्य बात नहीं है। इन सभी साहित्यकारों के विभिन्न पक्षों को समझे बिना हम रामविलास शर्मा की काव्य–दृष्टि को नहीं समझ सकते ।

रामविलास शर्मा की आलोचना का दायरा अत्यंत व्यापक, गंभीर और विस्तृत है। आदिकवि वाल्मीकि से लेकर मुक्तिबोध तक की काव्य रचनाओं का मूल्यांकन प्रगतिवादी चेतना की आधारभूमि पर करते हुए वे उन तमाम तत्वों को रेखांकित करना नहीं भूलते, जिनसे वर्तमान जीवन में व्याप्त जड़ता और संकीर्णता को तोड़ने और उससे लड़ने में सहायता मिलती हो। उन्होंने भारतीय साहित्य में बिखरे हुए अनेक विचारों को प्रस्तुत करने का अद्‌भुत् प्रयास किया, ताकि सामान्य जनमानस में सुरूचि सम्पन्नता का आगमन हो, आध्यात्मिक और मानसिक शक्ति का संचार हो, पराधीनता और समाज में जीवन के उच्च मूल्यों जैसे–त्याग, बलिदान, नैतिकता आदि की अधिक–से–अधिक प्रतिष्ठा हो सके। हिन्दी कविता के कई महान कवियों के काव्य–विश्लेषण की प्रक्रिया में उन्होंने प्रगतिशील और प्रतिक्रियावादी तत्वों से अवगत कराते हुए हिन्दी काव्य को स्पष्ट और तार्किक दृष्टि से देखने की प्रवृत्ति पैदा की। इसका प्रमाण उनके द्वारा भारतेंदु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, निराला, मुक्तिबोध, शमशेर, नागार्जुन आदि कवियों पर उनका लेखन है। वास्तव में, रामविलास शर्मा निराला को तो अपने युग का सबसे बड़ा ट्रेजिक कवि मानते हैं। निराला में सघन रूप में व्याप्त उदात्त करूणा, संघर्ष की क्षमता, दुःख का गहन बोध संभवतः रामविलास शर्मा की काव्य–दृष्टि की आधारभूत सामग्री है, जिस पर वह कविता की आलोचना का खूबसूरत प्रासाद निर्मित करते गए हैं। अंग्रेजी साहित्य तथा भारतीय भाषाओं के साहित्य के गहन अध्येता रामविलास शर्मा ने हिन्दी कविता की आलोचना के क्षेत्र में तुलसी, सूर, जायसी, निराला, नागार्जुन, केदारनाथ आदि कवियों के संदर्भ में अनेक भ्रांतियों का निराकरण कर इन कवियों के कवि–कर्म को सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं जातीय विरासत के परिप्रेक्ष्य में साहित्य–प्रेमियों के समक्ष सही–सही रूप में रखा।

संदर्भ–सूची

१.तारसप्तकः वक्तव्य, दसवाँ संस्करण पृष्ठ १८६
२.तारसप्तकः वक्तव्य, दसवाँ संस्करण पृष्ठ १८६
३.आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना, पृष्ठ ३६–४०

४.भाषा युगबोध और कविता; पृष्ठ ५७
५.परम्परा का मूल्यांकन, पृष्ठ १००
६.आस्था और सौंदर्य, पृष्ठ २६
७. भाषा युगबोध और कविता, पृष्ठ १४७
८. निराला की साहित्य साधना, द्वितीय खंड, पृष्ठ १६२
९. निराला की साहित्य साधना, द्वितीय खंड, पृष्ठ ५५१
१०.नयी कविता और अस्तित्ववाद, पृष्ठ १४१
११. मार्कसवाद और प्रगतिशील साहित्य, पृष्ठ ८१
१२. निराला, पृष्ठ ५६
१३. लोकजीवन और साहित्य, पृष्ठ ३२

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org